वक्तव्य: 02 (नाटक और प्रकरण)

(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के संस्कृत ऑनर्स प्रथम वर्षीय छात्र-छात्राओं के प्रथम पत्र के प्रथम भाग के लिए। डॉ. विकास सिंह की स्वयं की पुस्तक "नाटकीय पारिभाषिक शब्दावली" से एक अध्याय, छात्रों के लिए गृहपठन हेतु रूपक और नाटकों से सम्बन्धित विषय सामग्री)

पाठ्य संकलनकर्त्ता: डॉ. विकास सिंह, संस्कृत विभागाध्यक्ष, मारवाड़ी कॉलेज, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार।

1. नाटक :- **नट नृत्तौ** अर्थ की धातुअ से **ण्वुल्** प्रत्यय लगकर **नाटकम्** शब्द कि निष्पत्ति होती है जिसका अर्थ है नृत्यादि से समान्वित स्वांग ।

नाट्यदर्पण (1.5) में नाटक शब्द की व्युत्पत्ति एस प्रकार प्रस्तुत की गई है-

नाटकमिति नाटयति विचित्रं रञ्जनाप्रवेशेन सभ्यानां हृदयं नर्तयतीति नाटकम् ।
अर्थात नाटक की रञ्जना की विचित्रता के सामाजिकों के हृदय में प्रवेश से उनका हृदय नाच उठता है ।

नाट्क सभी रूपकों में श्रेष्ठ है, अत: रूपकमात्र को ही नाटक कहा गया है । दशरूपकार धनञ्जय ने कहा है-

प्रकृतित्वादधान्येषां भूयो रसपरिग्रहात् ।

सम्पूर्णलक्षणत्वाच्च पूर्वं नाट्कमुच्यते ॥ 3/1

अर्थात् अन्य सभी रूपक-भेदों की यह प्रकृति है, सबसे अधिक रस क उद्भावना इसी में होता है तथा वस्तु, नायक एवं रस के सभी लक्षण इसमें मिलते हैं ।

नाटक का स्वरूप निर्धारित करते हुए साहित्यदर्पणकार कहते हैं-

नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात् पञ्चसंधिसमान्वितम् ।

विलासद्धर्यादिगुणवद्युक्तं नानाविभूतिभि: ॥

सुखदु:खसमुद्भूति नानारसनिरन्तरम् ।

पञ्चादिका दशपरास्तत्राङ्का: परिकीर्त्तिता: ॥

प्रख्यातवंशो राजर्षिधीरोदात्त: प्रतापवान् ।

दिव्योऽथ दिव्यादिव्यो वा गुणवान्नायको मत: ॥

एक एव भवेदङ्गो श्रृङ्गारो वीर एव वा ।

अङ्गन्ये रसा: सर्वे कार्यो निर्वहणेऽद्भूत: ॥

चत्वार: पञ्च वा मुख्या: कार्यव्यापृतपूरूषा: ।

गोपुच्छाग्रसमाग्रं तु बन्धनम् तस्य कीर्तितम् ॥

नाटक वह है, जिसमें कथावस्तु किसी प्रसिद्ध वृत्त अर्थात् ख्यातवृत्त पर आधारित हो । ख्यातवृत का आशय किसी भी नाटक के इतिवृत के रामायण, महाभारत आदि पर आश्रित होने से है ।

मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श और निर्वहण नामक पाँच सन्धियों से युक्त हो ।

- नाटक में वर्णित रामादि चरितों के उदात्त गुणों और अभ्युदय के हेतुओं के कारण नाटक भी उदात्त एवं श्री सम्पन्न होता है ।
- इसके उद्भव का कारण मानव का सुख-दुखात्मक जीवन है ।
- इसमें भिन्न-भिन्न रसों एवं भावों का अनुभव हुआ करता है ।
- इसकी रचना कम से कम 5 तथा अधिकतम 10 अङ्कों में पूर्ण होती है ।
- इसका नायक प्रसिद्ध राजवंश का कोई राजर्षि हो सकता है । नायक को धीरोदात्तादि कोटी से युक्त तथा प्रतापी इत्यादि गुणों से युक्त होना चाहिये।
- यह नायक दिव्य (देवलोक का निवासी), अदिव्य (मर्त्यलोक का निवासी) या दिव्यादिव्य (दिव्य किन्तु मानवीय रूप में) इन तीनों में से कोई भी हो सकता है ।

(दिव्य-कृष्ण, अदिव्य-दुष्यन्त, दिव्यादिव्य-श्रीराम)

- नाटक में एक अङ्गीरस होना चाहिये । यह श्रृङ्गार अथवा वीर हो सकता है । अन्य रस-भाव अङ्ग रूप में विद्यमान रहें ।
- रूपक के इस भाग के अन्त विस्मयोत्पादक होता है ।
- नाटक में चार अथवा पाँच प्रधान पुरूषों का चरित्र वर्णन अपेक्षित है ।

- इसकी रचना **गोपुच्छ के अग्रभाग** के समान हो, तो अच्छी रहती है। इसके दो अर्थ ग्रहण किये जाते हैं। प्रथम- गाय की पूँछ की भांति क्रमश: अङ्कों का छोटा होना।

द्वितीय- जैसे गाय की पूँछ में कुछ बाल छोटे होते हैं तथा कुछ बड़े, वैसे ही नाटक में कुछ वृत्त वर्णन अथवा चरित्र-वर्णन मुखसन्धि में ही समाप्त हो जाते हैं, कुछ प्रतिमुख इत्यादि में।

इन समस्त विशेषताओं के अलावा नाटक में दूर की यात्रा, हत्या, युद्ध, राज्य विप्लव, षड्यन्त्र, मैथुन, लेपन, वस्त्र पहनना आदि बातों का प्रदर्शन नहीं होना चाहिये। तथा जिस पर नाटक की कथावस्तु आधारित है, उसके वध की सूचना भी नहीं होनी चाहिये तथा आवश्यक कथावस्तु का त्याग भी न हों।

2. प्रकरण :- **प्रक्रियते यस्मिन्निति** निष्पत्ति के अनुसार प्रकरण शब्द **प्र** उपसर्गपूर्वक **कृ** धातु से आधारे **ल्युट्** प्रत्यय लगकर बना है। इसकी व्युत्पत्ति निम्न है-

प्रकर्षेण क्रियते कल्प्यते नेता, फलं वस्तु वा व्यस्त-समस्ततयाऽत्रेति प्रकरणम्।

अर्थात् प्रकरण वह है जिसमें-

क्रम	कल्पित	अकल्पित
१.	नेता	वस्तु व फल
२.	वृत्त	नेता व फल
३.	फल	नेता व वृत्त
४.	नेता व वृत्त	फल
५.	नेता व फल	वृत्त
६.	वृत्त व फल	नेता
७.	नेता, वृत्त व फल	----------

साहित्यदर्पणकार ने लक्षण निम्न प्रकार से वताया है –

भवेत्प्रकरणे वृजं लौकिकं कविकल्पितम्।

श्रृङ्गारोऽङ्गी नायकस्तु विप्रोऽमात्योऽथवा वणिक्।

सापायधर्मकामार्थपरो धीरप्रशान्तक: ॥

नायिका कुलजा क्वापि वेश्या क्वापि द्वयं क्वचित् ।

तेन भेदास्त्रयस्तस्य तत्र भेदस्तृतीयकः ॥

कितवद्यूतकारादिविटचेटसंकुलः ।[6]

- प्रकरण वह रूपक विशेष है, जिसमें वृत्त लौकिक अथवा कवि-कल्पित होता है ।
- श्रृङ्गार रस अङ्गीरस होता है ।
- जिसका नायक विप्र, अमात्य अथावा वणिक-श्रेणी में से एक हो तथा नायक धीरप्रशान्त होता है ।
- नायक विपरित परिस्थिति में भी धर्म-अर्थ एवं काम-परायण के रूप में चित्रित किया जाता हो ।
- प्रकरण की नायिका कुलस्त्री, वेश्या अथवा दोनों हो सकती हैं ।
- प्रकरण में धूर्त,द्यूतकार,विट और चेट क भी पर्याप्त चित्रण हो ।

उदाहरण – मृच्छकटिकम्, मालतीमाधवम् (भवभूति) पुष्पदूषितकम्/पुष्पभूषितम्, तरङ्गदत्तम् ।

प्रकरण	**नायक**	**नायिका**
1. मृच्छकटिकम्	विप्र(चारूदत्त)	कुलजा व वेश्या (दोनों)
2.मालतीमाधवम्	अमास(माधव)	कुलजा (मालती)
3. पुष्पदूषितकम्	वणिक् (पुष्पभूषित)	कुलजा
4. तरङ्गदत्तम्	----------	वेश्या

नोट :- नाट्यदर्पणकार ने नायिका के भेद के कारण प्रकरण को 21 प्रकार का स्वीकार किया है ।

विश्वनाथ ने नायिका भेद से प्रकरण तीन प्रकार का स्वीकार किया है-

1. कुलजा प्रधान प्रकरण
2. वेश्या प्रधान प्रकरण
3. द्वयात्मक, इसी में द्यूतकार इत्यादि का चित्रण होता है

[6] साहित्यसर्पण, 6.224[1/2]—227[1/2]